AKSHANSH PUBLICATION

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

प्री बीएड PTET

प्रवेश पूर्व परीक्षा

7 संभाग और 41 जिलों पर आधारित

राजस्थान सामान्य ज्ञान | सामान्य ज्ञान एवं सामान्य विज्ञान | मानसिक योग्यता परीक्षण | हिन्दी | शिक्षण अभिक्षमता

आसान, सटीक एवं संपूर्ण अध्ययन अब एक ही पूस्तक से !

सम्पूर्ण स्टडी गाइड

विशेषताएँ:

1.सरल भाषा एवं व्यावहारिक उदाहरणों का संकलन

2.संपूर्ण पाठ्यक्रम एवं नवीनतम परीक्षा प्रणाली पर आधारित

3.परिक्षोपयोगी संभावित 4000+ प्रश्नोतरों का संग्रह

4.NCERT एवं RBSE की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित पाठ्यसामग्री

MRP ₹630

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज™

M. 6376957258, 6376491126

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

श्री आनंद अग्रवाल
निदेशक
लक्ष्य क्लासेज, उदयपुर

दो शब्द...

प्रिय विद्यार्थियों.....

आपके समक्ष राजस्थान प्री-टीचर एजुकेशन टेस्ट (PTET) की पुस्तक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस पुस्तक में राजस्थान PTET परीक्षा के लिए गहन अध्ययन की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए सम्पूर्ण नवीनतम पाठ्यसामग्री दी गई है।

यह पुस्तक सम्पूर्ण नवीनतम पाठयक्रम को ध्यान में रखकर तैयार की गई है, जिसके तहत भारत का सामान्य ज्ञान (भारतीय इतिहास एवं कला-संस्कृति, भारत का भूगोल, भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था), राजस्थान का सामान्य ज्ञान (राजस्थान का इतिहास एवं कला-संस्कृति, राजस्थान का भूगोल, राजस्थान की राजव्यवस्था, राजस्थान की अर्थव्यवस्था), शिक्षण अभिक्षमता, मानसिक योग्यता एवं भाषा योग्यता (हिन्दी एवं English) विषयों की सम्पूर्ण पाठ्यसामग्री दी गई है। इसके साथ ही इस पुस्तक में सभी अध्यायों के टॉपिक अनुसार प्रश्नों का भी समावेश किया गया है। इस पुस्तक को विषय विशेषज्ञों ने अपने विशिष्ट अनुभव व कौशल से तैयार किया हैं। यह पुस्तक राजस्थान PTET परीक्षा के प्रतिभागियों की आगामी परीक्षा की तैयारी को मजबूत बनाने और सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से लिखी गई है, जिससे वे अपनी तैयारी के लिए एक बेहतर रणनीति तैयार कर सकते हैं।

मार्गदर्शन- लक्ष्य क्लासेज के विषय विशेषज्ञ शिक्षकों के निर्देशन में।
पाठ्यसामग्री निर्माता- राजवर्धन बेगड़, गंगासिंह भाटी, जिज्ञासा गहलोत, निशांत सोलंकी और अनोपचन्द मंडा।

अंततः यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक PTET परीक्षा के अभ्यर्थियों के लिए अत्यंत लाभप्रद है।

लक्ष्य परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

आनंद अग्रवाल
निदेशक, लक्ष्य क्लासेज

लक्ष्य क्लासेस ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को लक्ष्य क्लासेस की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

विषय वस्तु

01 भारतीय इतिहास एवं कला संस्कृति

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	सिंधु घाटी सभ्यता	1 – 4
2.	वैदिक सभ्यता	4 – 8
3.	जैन एवं बौद्ध धर्म	9 – 10
4.	महाजनपद काल	11 – 13
5.	मौर्य साम्राज्य	14 – 19
6.	गुप्त साम्राज्य	19 – 24
7.	गुप्तोत्तर काल	25 – 34
8.	भक्ति एवं सूफी आन्दोलन	34 – 38
9.	1857 की क्रान्ति	38 – 41
10.	पुनर्जागरण एवं सामाजिक सुधार	42 – 48
11.	भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन	49 – 63

02 भारत का भूगोल

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	स्थिति एवं विस्तार	65 – 67
2.	भौतिक स्वरूप	67 – 76
3.	जलवायु	77 – 80
4.	प्राकृतिक वनस्पति	81 – 85
5.	वन्यजीव	85 – 90
6.	बहुउद्देशीय परियोजना	90 – 93
7.	मृदा	94 – 96
8.	खनिज संसाधन	97 – 102
9.	भारत की जनसंख्या	102 – 108

03 भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भारतीय संविधान एवं उसकी विशेषताएँ	110 – 116
2.	प्रस्तावना	116 – 118
3.	मौलिक अधिकार	119 – 120
4.	मूल कर्तव्य	121 – 122
5.	राष्ट्रपति	122 – 124
6.	प्रधानमन्त्री एवं मन्त्रिपरिषद्	125 – 128
7.	संसद	129 – 133
8.	उच्चतम न्यायालय	133 – 137

04 राजस्थान इतिहास एवं कला संस्कृति

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्राचीन सभ्यता	139 – 141
2.	राजवंश	142 – 175
3.	स्वतंत्रता आंदोलन	176 – 190
4.	राजस्थान का एकीकरण	190 – 192
5.	महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व	193 – 197
6.	वास्तुकला एवं स्मारक	198 – 215
7.	मेले एवं त्यौहार	215 – 218
8.	लोक कलाएं	219 – 221
9.	चित्रकला	222 – 225
10.	लोक देवी-देवता	225 – 231
11.	संत सम्प्रदाय	232 - 238
12.	लोक नृत्य एवं नाट्य	238 – 244
13.	लोक संगीत एवं वाद्य यंत्र	244 – 252
14.	भाषा एवं साहित्य	252 – 258
15.	वेशभूषा एवं आभूषण	258 – 265
16.	संस्कृति एवं सामाजिक जीवन	266 – 276

05 राजस्थान का भूगोल

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	स्थिति एवं विस्तार	278 – 280
2.	भौतिक स्वरूप एवं विभाजन	281 – 287
3.	जलवायु	288 – 293
4.	अपवाह तंत्र एवं झीलें	293 – 300
5.	सिंचाई परियोजनाएँ	301 – 304
6.	वन एवं वन्य जीव	305 – 310
7.	मृदा	310 – 312
8.	प्रमुख फसलें	312 – 315
9.	खनिज	316 – 324
10.	ऊर्जा संसाधन	324 – 328
11.	उद्योग	329 – 333
12.	पर्यटन स्थल एवं परिवहन	334 – 339
13.	जनसंख्या	339 – 343

06 राजस्थान की राजव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राज्यपाल	345 – 348
2.	मुख्यमन्त्री एवं मन्त्रिपरिषद्	349 – 352
3.	राज्य विधानसभा	353 – 357
4.	उच्च न्यायालय	358 – 360
5.	राज्य लोक सेवा आयोग	361 – 362
6.	राज्य निर्वाचन आयोग	363 – 364
7.	राज्य सूचना आयोग	364 – 366
8.	राज्य मानवाधिकार आयोग	366 – 368
9.	राज्य महिला आयोग	368 – 369
10.	लोकायुक्त	370 – 371
11.	जिला प्रशासन	372 – 376
12.	स्थानीय स्वशासन एवं पंचायती राज व्यवस्था	376 – 383

07 राजस्थान की अर्थव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	ग्रामीण विकास	385 – 388
2.	आर्थिक विकास	389 – 407
3.	विकास परियोजनाएँ	407 – 411
4.	कृषि क्षेत्र	411 – 417
5.	पशुपालन	417 – 419

08 शिक्षण अभिक्षमता

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	शिक्षण अधिगम	421 – 432
2.	नेतृत्व गुण	433 – 438
3.	सृजनात्मकता	439 – 443
4.	सतत् एवं समग्र (व्यापक) मूल्यांकन	444 – 452
5.	संप्रेषण	452 – 456
6.	व्यावसायिक अभिवृत्ति	457 – 459
7.	सामाजिक संवेदनशीलता	460 – 465

09 मानसिक योग्यता

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	संख्या & अक्षर श्रृंखला	467 – 473
2.	लुप्त संख्या	474 – 478
3.	कोडिंग-डिकोडिंग	479 – 487
4.	रक्त सम्बन्ध	488 – 494
5.	दिशा परीक्षण	495 – 502
6.	घड़ी परीक्षण	503 – 508
7.	कैलेण्डर	509 – 515
8.	सादृश्यता	516 – 522
9.	वर्गीकरण या बेमेल को अलग करना	522 – 524

10.	वर्णमाला परीक्षण	525 – 529
11.	तार्किक वेन आरेख	530 – 534
12.	जल एवं दर्पण छवियाँ	535 – 539
13.	आकृतियों की गणना	539 – 544
14.	क्रम परीक्षण	545 – 549
15.	बैठक व्यवस्था एवं पहेली परीक्षण	550 - 554
16.	घन, घनाभ और पासा	555 – 562
17.	आयु परीक्षण	562 – 565
18.	विविध	566 – 569
19.	न्याय वाक्य	570 – 579
20.	कथन और निष्कर्ष	579 – 584
21.	कथन एवं तर्क	585 – 588
22.	कथन एवं कार्यवाही	589 – 592
23.	कथन एवं पूर्वधारणाएँ	593 – 595

10 हिन्दी

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	हिन्दी का सामान्य परिचय	597 – 600
2.	वाक्य विचार	600 – 605
3.	संधि एवं संधि विच्छेद	606 – 614
4.	समास एवं समास विग्रह	614 – 619
5.	उपसर्ग	619 – 622
6.	प्रत्यय	623 – 630
7.	विलोम शब्द	631 – 638
8.	पर्यायवाची शब्द	639 – 643
9.	युग्म शब्द	643 – 646
10.	शब्द शुद्धि	647 – 649
11.	वाक्य शुद्धि	650 – 653
12.	मुहावरे	653 – 658
13.	लोकोक्तियाँ	659 – 663
14.	वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द	664 – 667

11 ENGLISH

S.No.	CHAPTER	PAGE NO.
1.	ARTICLES	669 – 671
2.	PREPOSITION	672 – 674
3.	CONNECTIVES (CONJUNCTIONS)	674 – 676
4.	SENTENCES	676 – 679
5.	TENSE	679 – 686
6.	DIRECT AND INDIRECT SPEECH	687 – 692
7.	VOCABULARY	692 – 699
8.	SYNONYMS	700 – 704
9.	ANTONYMS	704 – 707
10.	SPELLING ERRORS	708 – 709
11.	ONE WORD SUBSTITUTION	709 – 713
12.	READING COMPREHENSION	713 – 717

❑❑❑❑

भारतीय इतिहास

1 सिंधु घाटी सभ्यता

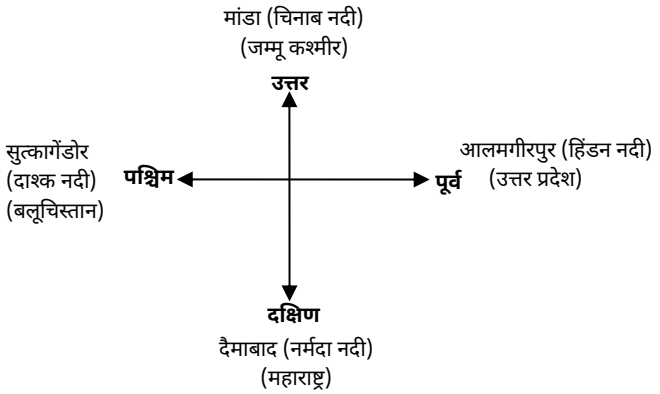

सैंधव सभ्यता की खोज -

क्रमांक	वर्ष	घटना/कार्य	संबंधित व्यक्ति/घटना
1	1842 ई.	हड़प्पा के नीचे प्राचीन सभ्यता होने की संभावना व्यक्त की।	चार्ल्स मैसन
2	1851-53 ई.	हड़प्पा के टीले का सर्वेक्षण किया।	अलेक्जेंडर कनिंघम
3	1856 ई.	हड़प्पा का मानचित्र जारी किया।	अलेक्जेंडर कनिंघम
4	1856 ई.	हड़प्पा के टीले से प्राप्त ईंटों का उपयोग लाहौर से कराची रेलवे लाइन बिछाने में किया गया।	जॉन बर्टन और विलियम बर्टन
5	1861 ई.	भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना की।	अलेक्जेंडर कनिंघम
6	1904 ई.	भारतीय पुरातत्व एवं सर्वेक्षण विभाग के अधीन भारत में प्राचीन इमारतों व नगरों के संरक्षण का आदेश जारी किया।	लॉर्ड कर्जन
7	1904 ई.	जॉन मार्शल ने भारतीय पुरातत्व विभाग के निदेशक के रूप में कार्यभार संभाला।	जॉन मार्शल
8	1921 ई.	हड़प्पा के टीले की खोज।	रायबहादुर दयाराम साहनी
9	1922 ई.	मोहनजोदड़ो की खोज।	राखालदास बनर्जी

सैंधव सभ्यता का काल निर्धारण-

- हड़प्पा सभ्यता के काल निर्धारण के संबंध में विद्वान एकमत नहीं है।
  1. जॉन मार्शल के अनुसार 3250 - 2750 ई.पू.
  2. अर्नेस्ट मैके के अनुसार 2800 - 2500 ई.पू.
  3. माधोस्वरूप वत्स के अनुसार 3500 - 2700 ई.पू.
  4. मार्टीमर ह्वीलर के अनुसार 2500 - 1500 ई.पू.
  5. डी.पी. अग्रवाल व रोमिला थापर के अनुसार 2300 - 1750 ई. पू.
- रेडियो कार्बन (C-14) तिथि के अनुसार हड़प्पा सभ्यता का सर्वमान्य काल 2300-1750 ई. पू. को माना जाता है।

सैंधव सभ्यता का विस्तार एवं क्षेत्र –

- सैंधव सभ्यता का विस्तार उत्तर में मांडा (जम्मू) से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक तथा पश्चिम में सुत्कागेंडोर से लेकर पूर्व में आलमगीरपुर (मेरठ) तक है।
- वह उत्तर से दक्षिण लगभग 1400 किमी. तक तथा पूर्व से पश्चिम लगभग 1600 किमी. तक फैली हुई थी। अभी तक उत्खनन तथा अनुसंधान द्वारा करीब 2800 स्थल ज्ञात किये गए हैं।
- हड़प्पा सभ्यता के अंतर्गत पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, अफगानिस्तान, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के भाग आते हैं।

हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल-

स्थल	नदी/सागर तट	खोजकर्ता
हड़प्पा	रावी नदी	दयाराम साहनी
मोहनजोदड़ो	सिंधु नदी	राखालदास बनर्जी
लोथल	भोगवा नदी	एस. आर. राव
कालीबंगा	घग्घर नदी	अमलानन्द घोष
रोपड़	सतलज नदी	यज्ञदत्त शर्मा
कोटदीजी	सिंधु नदी	फजल अहमद खां
चन्हुदड़ो	सिंधु नदी	एन. जी. मजूमदार
आलमगीरपुर	हिन्डन नदी	यज्ञदत्त शर्मा
सुत्कागेंडोर	दाश्क नदी	ऑरेल स्टाइन
बनवाली	सरस्वती नदी	रवीन्द्र सिंह बिस्ट

सैंधव सभ्यता का आकार एवं नामकरण –

- सैंधव सभ्यता का वास्तविक स्वरूप त्रिभुजाकार था, परंतु वर्तमान में नवीन स्थल प्रकाश में आने के कारण अब इस का आकार विषमकोणिय चतुर्भुजाकार है।
- जॉन मार्शल 'सिंधु सभ्यता' नाम का प्रयोग करने वाले पहले पुरातत्वविद् थे।
- सिंधु सभ्यता के विकास करने वाली जाति में सर्वाधिक मान्य मत है कि यहाँ की बहुसंख्यक जनता भूमध्यसागरीय प्रजाति की थी।

सैंधव सभ्यता की नगर योजना एवं विशेषताएँ –

क्रमांक	विशेषता	विवरण/उदाहरण
1	सभ्यता का काल	कांस्ययुगीन सभ्यता
2	प्रमुखता	प्रथम नगरीय सभ्यता

3	प्रमुख विशेषता	अद्भुत नगर नियोजन और जल निकासी प्रणाली
4	नगर का विभाजन	दो भागों में विभाजित – पूर्वी और पश्चिमी
5	पश्चिमी भाग (दुर्ग)	शासक वर्ग निवास करता था, चारों ओर दीवार से घिरा था।
6	पूर्वी भाग (निचला शहर)	सामान्य नागरिक, व्यापारी, कारीगर, श्रमिक निवास करते थे; दीवार से घिरा हुआ।
7	नगर योजना	ग्रिड पद्धति पर आधारित; सड़कें समकोण पर एक-दूसरे को काटती थी।
8	सड़कें और नालियाँ	मुख्य सड़कें उत्तर-दक्षिण दिशा में; सड़कों के किनारे ढकी हुई नालियाँ।
9	जल निकासी प्रणाली	छोटी नालियों से गंदा पानी बड़े नालों में जाता था।
10	नगरों का निर्माण	पक्की ईंटों से; कालीबंगा और रंगपुर में कच्ची ईंटों का उपयोग।
11	ईंटों का अनुपात	4:2:1
12	मकान	प्रत्येक मकान में रसोईघर, स्नानागार, कुएँ और नालियाँ थीं।
13	मकानों के दरवाजे	मुख्य सड़क की ओर न खुलकर गली में खुलते थे; दरवाजे किनारे पर होते थे।
14	सबसे बड़ी ईंट	मोहनजोदड़ो से प्राप्त।
15	नदी किनारे नगर	हड़प्पा नगर नदियों के किनारे स्थित थे।
16	समानता	हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की नगर योजना लगभग समान थी।

सैंधव सभ्यता के प्रमुख स्थल –

हड़प्पा-
- **स्थान-** पाकिस्तान, पंजाब (रावी नदी के किनारे)।
- **खोज-** 1921, दयाराम साहनी।
- **अवशेष-**
  - उर्वरा देवी की मृणमूर्ति।
  - कब्रिस्तान R-37।
  - विशाल अन्नागार।
  - काँसे का दर्पण, श्रृंगार पेटी।
  - मानव-बकरे के शवाधान के साक्ष्य।
  - सर्वाधिक अलंकृत मोहरें।

मोहनजोदड़ो-
- **स्थान-** पाकिस्तान, सिंध (सिंधु नदी के किनारे)।
- **खोज-** 1922, राखालदास बनर्जी।
- **अवशेष-**
  - विशाल स्नानागार।
  - विशाल अन्नागार।
  - काँसे की नर्तकी।
  - पशुपतिनाथ शिव की मूर्ति।
  - सर्वाधिक मोहरें।
  - मानव कंकाल।

लोथल-
- **स्थान-** गुजरात, अहमदाबाद (भोगवा नदी के किनारे)।
- **खोज-** 1954, एस. आर. राव।
- **अवशेष-**
  - गोदीबाड़ा (बंदरगाह)।
  - मनके बनाने का कारखाना।
  - माप-तौल का पैमाना।
  - अग्निवेदिकाएँ।
  - फ़ारस की मोहरें।

कालीबंगा-
- **स्थान-** राजस्थान, हनुमानगढ़ (घग्घर नदी के किनारे)।
- **खोज-** 1953, अमलानंद घोष।
- **अवशेष-**
  - जोते हुए खेत।
  - ऊँट के प्रथम साक्ष्य।
  - हल की आकृति।
  - हवनकुंड।
  - भूकंप के साक्ष्य।

चन्हुदड़ो-
- **स्थान-** पाकिस्तान, सिंध।
- **खोज-** 1931, एन. जी. मजूमदार।
- **अवशेष-**
  - वक्राकार ईंटें।
  - सौंदर्य प्रसाधन।
  - हाथी का खिलौना।
  - पित्तल की इक्का गाड़ी।

बनवाली-
- **स्थान-** हरियाणा, हिसार (सरस्वती नदी के किनारे)।
- **खोज-** 1973-74, रवींद्र सिंह बिष्ट।
- **अवशेष-**
  - मिट्टी के खिलौने (हल)।
  - जौ, तिल, सरसों के ढेर।

धौलावीरा-
- **स्थान-** गुजरात, कच्छ (खड़ी द्वीप)।
- **खोज-** 1967-68, जगपति जोशी।
- **अवशेष-**
  - तीन भागों में विभाजित नगर।
  - जल संरक्षण प्रणाली।
  - स्टेडियम।
  - सूचना पट्ट (पॉलिशदार सफेद पत्थर)।

अन्य स्थल-
1. **सुरकोटदा (गुजरात)-** घोड़े की हड्डियाँ।
2. **आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश)-** सबसे पूर्वी स्थल।
3. **रोपड़ (पंजाब)-** मानव कब्र के नीचे कुत्ते का शव।
4. **राखीगढ़ी (हरियाणा)-** भारत का सबसे बड़ा हड़प्पाई स्थल।

मुख्य तथ्य-

- सभ्यता काल- 2500-1750 ई.पू.।
- लिपि- चित्रलिपि (अब तक अपठनीय)।
- प्रमुख नदी- सिंधु और उसकी सहायक नदियाँ।
- प्रमुख धातु- तांबा, कांसा।
- मृत्यु कारण- बाढ़, सूखा, आक्रमण, जलवायु परिवर्तन।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है?

(a) आलमगीरपुर - उत्तर प्रदेश
(b) लोथल - गुजरात
(c) कालीबंगा - हरियाणा
(d) रोपड़ - पंजाब

2. हड़प्पा सभ्यता के निम्नलिखित किस नगर में चिनाई के कार्य में तक्षित प्रस्तर का प्रयोग कच्ची ईंटों के साथ किया जाता था?

(a) हड़प्पा
(b) मोहनजोदड़ो
(c) लोथल
(d) धौलावीरा

3. हड़प्पा सभ्यता में निम्नलिखित में किसकी जानकारी नहीं थी?

(a) ढेकली
(b) कुआं
(c) नहर
(d) कुएं पर पुल्ली

4. निम्नलिखित में किसकी जानकारी हड़प्पा सभ्यता काल में नहीं थी?

(a) पक्की ईंटें
(b) दीवारों की इंग्लिश बांड प्रणाली
(c) घोड़िया छत
(d) वैज्ञानिक तरीके से बनाई गई मेहराब

5. निम्नलिखित में उस क्षेत्र की पहचान कीजिए जहां सिंधु सभ्यता के पुरास्थल नहीं मिले हैं-

(a) बलूचिस्तान
(b) उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती प्रांत का पहाड़ी क्षेत्र
(c) निम्न हिमालय क्षेत्र
(d) उत्तरी महाराष्ट्र

6. मेसोपोटामिया के साहित्य में निम्नलिखित में से किस स्थान का संदर्भ हड़प्पा सभ्यता के लिए अभिप्रेत रहा होगा?

(a) मर्हीषि
(b) दिलमुन
(c) मेलुहा
(d) मकान

7. हड़प्पा लिपि के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) कुछ ऐसे उदाहरण भी उपलब्ध हैं कि यह लिपि बाईं ओर से दाईं ओर को लिखी जाती है।
(b) हड़प्पा लिपि शब्दाक्षरिक है, अर्थात् प्रत्येक प्रयुक्त प्रतीक किसी शब्द या शब्दांश के लिए होता है।
(c) यह सामान्य रूप से दाईं ओर से बाईं ओर पढ़ने के लिए लिखी जाती है।
(d) लेखन के सबसे लंबे प्रतिरूप में 30 संकेत हैं।

8. निम्नलिखित में से कौन-सा हड़प्पा स्थल हरियाणा में स्थित नहीं है?

(a) रोपड़
(b) बनावली
(c) राखीगढ़ी
(d) मिताथल

9. सैन्धव सभ्यता का कौन-सा स्थल समुद्र व्यापार का मुख्य केंद्र माना जाता था?

(a) कालीबंगा
(b) हड़प्पा
(c) धौलावीरा
(d) लोथल

10. निम्नलिखित में से किस पुरास्थल के दुर्ग में 'सात अग्नि कुण्ड' प्राप्त हुए हैं?

(a) हड़प्पा
(b) मोहनजोदड़ो
(c) लोथल
(d) कालीबंगा

11. निम्नलिखित हड़प्पाकालीन स्थलों में से किसमें नाली के निर्माण में लकड़ी का प्रयोग किया गया है?

(a) लोथल
(b) राखीगढ़ी
(c) कालीबंगा
(d) आलमगीरपुर

12. एक मुद्रा पर एक व्यक्ति बाघ से लड़ता हुआ अंकित है, यह किस हड़प्पन स्थल से प्राप्त हुई है?

(a) मोहनजोदड़ो
(b) राखीगढ़ी
(c) कालीबंगा
(d) बणावली

13. हड़प्पा संस्कृति के किस स्थल से मध्य नगर का प्रमाण मिला है?

(a) कालीबंगा
(b) राखीगढ़ी
(c) सुत्कागेंडोर
(d) बनावली

14. सैंधव सभ्यता के सबसे पूर्वी स्थल (आलमगीरपुर) का उत्खनन किया गया था-
(a) वाई. डी. शर्मा द्वारा (b) ए. घोष द्वारा
(c) बी. के. थापर द्वारा (d) बी. बी. लाल द्वारा

15. सूची-I में उल्लिखित स्थलों को सूची-II में उल्लिखित तथ्यों से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट में से सही विकल्प का चयन कीजिए-

सूची-I	सूची-II
A. हड़प्पा	1. शवाधान
B. लोथल	2. गोदीबाड़ा
C. कालीबंगा	3. एक नर्तकी की आकृति
D. मोहनजोदड़ो	4. जुता हुआ खेत

कूट-

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	3	4	1	2
(c)	4	3	2	1
(d)	1	2	4	3

16. सिंधु घाटी की लिपि की सूचना प्राप्त होती है-
(a) आभूषणों से (b) मूर्तियों से
(c) मोहरों से (d) खिलौनों से

17. भारतीय उप-महाद्वीप के किस भाग में हड़प्पा संस्कृति का उदय हुआ?
(a) पूर्वी (b) पश्चिमी
(c) उत्तर-पश्चिमी (d) दक्षिण-पूर्वी

18. मांडा का पुरातात्विक स्थल, जो भारत की सीमा के अंतर्गत हड़प्पा संस्कृति के सबसे उत्तरी छोर को चिह्नित करता है, किस नदी पर स्थित है?
(a) झेलम (b) चिनाब
(c) घग्घर (d) सिंधु

19. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता सिंधु घाटी की सभ्यता को विश्व की अन्य समकालीन सभ्यताओं से विशिष्ट बनाती है?
(a) धार्मिक विश्वास (b) नगरीय योजना
(c) कृषि का विकास (d) राजतंत्र का विकास

20. गोदीबाड़ा का साक्ष्य हड़प्पा संस्कृति के किस स्थान से प्राप्त हुआ है?
(a) हड़प्पा (b) धौलावीरा
(c) लोथल (d) रंगपुर

ANSWER KEY				
01. [c]	02. [d]	03. [d]	04. [d]	05. [d]
06. [c]	07. [d]	08. [a]	09. [d]	10. [d]
11. [c]	12. [a]	13. [a]	14. [a]	15. [d]
16. [c]	17. [c]	18. [b]	19. [b]	20. [c]

♦♦♦♦

2 वैदिक सभ्यता

- वैदिक अथवा आर्य सभ्यता का उदय सिन्धु घाटी सभ्यता के पतन के बाद हुआ।
- वैदिक सभ्यता को भारत की प्रथम ग्रामीण सभ्यता तथा लौह युगीन सभ्यता माना जाता है।
- वैदिक सभ्यता की जानकारी के स्त्रोत वेद हैं, जिनमें ऋग्वेद सबसे प्राचीन है व सर्वाधिक बड़ा स्त्रोत है।
- वेद शब्द 'विद्' धातु से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है जानना या ज्ञान।
- इस सभ्यता के संस्थापकों को 'आर्य' कहा गया है।
- 'आर्य' शब्द का अर्थ 'श्रेष्ठ/ सुसंस्कृत /उच्च कुल में उत्पन्न व्यक्ति' होता है।

आर्यों का मूल स्थान –
- आर्य किस प्रदेश के मूल निवासी थे, यह इतिहासकारों के बीच एक विवादास्पद प्रश्न है।
- आर्यों के मूल स्थान के बारे में अलग-अलग मत प्रचलित हैं, जो इस प्रकार हैं-
  1. बाल गंगाधर तिलक के अनुसार - उत्तरी ध्रुव
  2. गंगानाथ झा के अनुसार - ब्रह्मऋषि प्रदेश
  3. अविनाश चन्द्र के अनुसार - सप्तसैंधव प्रदेश
  4. दयानंद सरस्वती के अनुसार - तिब्बत
  5. मैक्समूलर के अनुसार - मध्य एशिया (बैक्ट्रिया)
  6. गाइल्स के अनुसार - हंगरी की डेन्यूब नदी घाटी

वैदिक सभ्यता का कालखण्ड -
- वैदिक सभ्यता का काल 1500 ई.पू.-600 ई.पू. मन गया है।
- वैदिक काल को 2 भागों में विभाजित किया गया है-
  1. ऋग्वैदिक काल (1500 से 1000 ई.पू.)
  2. उत्तरवैदिक काल (1000 से 600 ई.पू.)

ऋग्वैदिक काल (1500 से 1000 ई.पू.)
- ऋग्वैदिक संस्कृति ग्रामीण, पशुपालन पर आधारित राजतंत्रीय थी।
- इस काल की सम्पूर्ण जानकारी हमें ऋग्वेद से मिलती है।
- ऋग्वेद में आर्य निवास के लिए सर्वत्र सप्त सैंधव शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ है सात नदियों का क्षेत्र ये नदियाँ है – सिंधु, सरस्वती, परुष्णी (रावी), वितस्ता (झेलम), शतुद्रि (सतलज), अस्किनी (चिनाब) और विपासा (व्यास)।
- आर्यों का भौगोलिक विस्तार पंजाब, अफगानिस्तान, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश या यमुना नदी के पश्चिम भाग तक था।

भौगोलिक स्थिति-

ऋग्वैदिक कालीन नदियाँ -	
वर्तमान नाम	प्राचीन नाम
झेलम	वितस्ता
चिनाब	अस्किनी

व्यास	विपासा (विपाशा)
रावी	परुष्णी
सतलज	शतुद्रि
काबुल	कुभा
कुर्रम	क्रुमु (क्रुभु)
गोमल	गोमती
घग्घर/रक्षी/चितंग	दृषद्वती

सामाजिक स्थिति-
- पितृसत्तात्मक समाज।
- वर्ण व्यवस्था कर्म आधारित।
- दास प्रथा का प्रचलन।
- शाकाहारी भोजन प्रचलित।

स्त्रियों की स्थिति-
- सभा व समिति में भाग लेती थीं।
- शिक्षा और यज्ञ का अधिकार।
- उपनयन संस्कार और विदुषी स्त्रियाँ: मैत्रेयी, गार्गी, लोपामुद्रा।

विवाह
- विवाह पवित्र संस्कार।
- विधवा विवाह, नियोग प्रथा, अंतर्जातीय विवाह प्रचलित।
- बाल विवाह और सती प्रथा नहीं थी।
- आजीवन अविवाहित कन्या: "अमाजू"।

शिक्षा
- मौखिक शिक्षा गुरुकुल में।
- उपनयन संस्कार के बाद शिक्षा।

आर्थिक स्थिति-
- **मुख्य व्यवसाय-** कृषि और पशुपालन।
- गाय विनिमय का माध्यम और "अघन्या" मानी जाती थी।
- **प्रमुख अनाज-** यव (जौ)।
- **सिंचाई-** स्वंयजा (प्राकृतिक जल), खत्रिनमा (कृत्रिम साधन)।
- तांबा और कांसे का उपयोग, लोहे से अपरिचित।

धार्मिक स्थिति
- **बहुदेववादी-** प्रकृति की पूजा।
- **प्रमुख देवता:**
  - **इन्द्र-** युद्ध, वर्षा का देवता।
  - **वरुण-** जलनिधि का स्वामी।
  - **अग्नि-**आहुतियों का देवता।
  - देवमंडली तीन भागों में विभाजित।

अन्य विशेषताएँ-
- आर्यों का मुख्य निवास स्थान- सप्त सैंधव क्षेत्र।
- कृषि योग्य भूमि- उर्वरा/क्षेत्र।
- हल चलाने वाले को "कीवाश" कहते थे।

उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.)

1. काल और साहित्य-
- **साहित्य-** उत्तरवैदिक काल में यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, आरण्यक, और उपनिषदों की रचना हुई।
- **लौह प्रौद्योगिकी-** इस काल में लौह धातु का उपयोग आरंभ हुआ, जो बाद में प्रौद्योगिकियों और कृषि उपकरणों में महत्त्वपूर्ण हो गया।
- **वेदों का विकास-** उपनिषदों के माध्यम से वैदिक धर्म के गहरे तात्त्विक सिद्धांतों की प्रस्तुति हुई, जैसे आत्मा, ब्रह्म, और पुनर्जन्म का विचार।

2. भौगोलिक विस्तार और समाज-
- आर्य सभ्यता पंजाब से बढ़कर गंगा-यमुना दोआब (वर्तमान उत्तर प्रदेश) तक फैल गई थी, जो आगे चलकर भारतीय सभ्यता का केंद्र बन गई।
- **नदियों का महत्त्व-** शतपथ ब्राह्मण में नर्मदा और गण्डक नदियों का उल्लेख मिलता है, जो इस काल में आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थीं।

3. राजनीतिक स्थिति-
- **कबीले से जनपद तक का परिवर्तन-** ऋग्वैदिक काल में कबीले आधारित व्यवस्था थी, लेकिन उत्तरवैदिक काल में कृषि के विकास के कारण स्थायित्व आया और कबीले जनपदों में बदल गए।
- **राजतंत्र का उदय-** राजा का पद अब वंशानुगत हो गया, और वे देवताओं के प्रतिनिधि के रूप में पूजा जाने लगे। शासक को अपने क्षेत्र की रक्षा और शासन की जिम्मेदारी थी।
- **राज्याभिषेक-** शतपथ ब्राह्मण में राज्याभिषेक की परंपरा का उल्लेख है, जिसमें राजा का धार्मिक रूप से अभिषेक किया जाता था।
- **प्रशासनिक पद-** स्थपति (सीमांत प्रदेश के प्रशासक) और शतपति (100 गाँवों के समूह का अधिकारी) जैसे पदों का उल्लेख मिलता है। राजा के अधीन ये अधिकारी प्रशासन के महत्वपूर्ण अंग थे।

4. सामाजिक स्थिति-
- **वर्ण व्यवस्था-** इस काल में वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गई, और कर्म आधारित नहीं रही। इसके परिणामस्वरूप जातियों का रूप और अधिक सख्त हो गया।
- **गौत्र प्रथा-** गौत्र प्रथा की शुरुआत हुई, जो एक वंश या कुल को व्यक्त करती थी। यह प्रथा अथर्ववेद में उल्लेखित है, हालांकि इसका उपयोग ऋग्वेद में भी था।
- **पितृसत्तात्मक परिवार-** संयुक्त परिवार और पितृसत्तात्मक संरचना इस काल में भी प्रचलित रही।
- **स्त्रियों की स्थिति-** उत्तरवैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई। वे अब धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों में कम भागीदारी करने लगीं और संपत्ति के अधिकार से वंचित कर दी गईं।

5. विवाह प्रथा-
- **मनुस्मृति में आठ प्रकार के विवाह-** ब्रह्म विवाह (कन्या का योग्य वर से विवाह), देव विवाह (यज्ञ में कन्या का विवाह), प्रजापत्य विवाह (वर द्वारा कन्या से विवाह), गंधर्व विवाह (प्रेम विवाह), असुर विवाह (धन के बदले विवाह), राक्षस विवाह (बलात्कार द्वारा विवाह), पैशाच विवाह (नशीली स्थिति में विवाह)।
- विवाह के इन प्रकारों से समाज की विभिन्न सामाजिक और धार्मिक परंपराओं का संकेत मिलता है।

6. आश्रम व्यवस्था-

- **आश्रमों का विकास-** छान्दोग्य उपनिषद् में प्रारंभिक तीन आश्रमों का उल्लेख है, लेकिन 'जाबालोपनिषद्' में चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) का उल्लेख मिलता है।
- ये आश्रम समाज में जीवन के विभिन्न चरणों को व्यवस्थित करने के लिए थे, जहां व्यक्ति को विशेष रूप से आत्मविकास और समाज सेवा का अवसर मिलता था।

7. आर्थिक स्थिति-

- **कृषि और शिल्प-** इस काल में कृषि की प्रधानता बढ़ी और शिल्प उद्योगों का विकास हुआ। हालांकि, पशुपालन भी महत्वपूर्ण था, लेकिन अब मुख्य व्यापार कृषि से जुड़ा हुआ था।
- **लोहे का उपयोग-** लोहे का उपयोग शस्त्र निर्माण और कृषि उपकरणों के निर्माण में किया गया। इसके कारण कृषि की प्रक्रिया और अधिक प्रभावी हो गई।
- **व्यावसायिक संगठन-** व्यापारी और शिल्पकार वर्गों के लिए 'श्रेष्ठी' (व्यापारी प्रमुख) और 'गण' (व्यापारिक समूह) जैसे संगठन स्थापित हुए थे। ये संगठन व्यापार के संचालन और प्रशासन में मदद करते थे।
- **वस्तु विनिमय प्रणाली-** इस समय वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी, जहां सिक्के की बजाय माल का आदान-प्रदान होता था।
- **कर व्यवस्था-** कृषकों और व्यापारियों पर कर का भारी बोझ था। ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ग मुख्य रूप से करों से मुक्त थे, और वैश्य वर्ग अधिकांश करों का भार उठाता था।

8. धार्मिक स्थिति-

- **वेदों में देवताओं का परिवर्तन-** उत्तर वैदिक काल में ब्रह्मा, विष्णु और शिव प्रमुख देवता बने, जबकि ऋग्वैदिक काल के इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि देवताओं का महत्त्व कम हुआ।
- **यज्ञ और कर्मकांड-** यज्ञ अनुष्ठान में वृद्धि हुई, जिसमें धार्मिक कर्मकांड और बलि की परंपरा अधिक प्रचलित हुई। पंच महायज्ञ (ब्रह्म, देव, पितृ, मनुष्य, भूत यज्ञ) का पालन किया जाता था।
- **तीन ऋण-**
  - **देव ऋण-** देवताओं के प्रति कृतज्ञता,
  - **ऋषि ऋण-** ज्ञान और साहित्य के प्रति सम्मान,
  - **पितृ ऋण-** पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता।
- **पुरुषार्थ-** चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का महत्व बढ़ा और जीवन के उद्देश्य के रूप में इन्हें स्वीकार किया गया।

वैदिक साहित्य

वेद-

- **शाब्दिक अर्थ-** 'विद्' धातु से बना, जिसका अर्थ है 'ज्ञान का भंडार'।
- **रचनाकार-** वेदों के रचनाकार अपौरुषेय हैं, अर्थात वेदों की रचना किसी व्यक्ति द्वारा नहीं, बल्कि ये दैवीय ज्ञान के अंश माने जाते हैं।
- **संकलन-** वेदों का संकलन महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया।
- **प्रकार-** वेद चार प्रकार के होते हैं:

1. ऋग्वेद 2. यजुर्वेद
3. सामवेद 4. अथर्ववेद

1. ऋग्वेद-

- **विभाजन-** 10 मंडलों में विभक्त है, जिसमें 1028 सूक्त और 10,562 मंत्र हैं।
- **मुख्य विषय-** देवताओं की स्तुति और अग्नि देवता को संबोधित ऋचाएँ।
- **गायत्री मंत्र-** तीसरे मंडल में सविता देवता को समर्पित है। इसके रचनाकार विश्वामित्र हैं।
- **शाखाएँ-** ऋग्वेद की पाँच शाखाएँ हैं (शाकल, वाकल, अश्वलायन, शाखायन, माण्डुक्य)।
- **सोमरस-** इसे पेय पदार्थों में सर्वोत्तम माना गया है, इसका उल्लेख 9वें मंडल में है।

2. यजुर्वेद-

- **अर्थ-** 'यज' का अर्थ है 'यज्ञ', इसमें यज्ञ विधियों का वर्णन किया गया है।
- **भाषा-** यजुर्वेद में पद्य और गद्य दोनों का प्रयोग है।

शाखाएँ:

i. **कृष्ण यजुर्वेद-** गद्य और पद्य दोनों में है, दक्षिण भारत में प्रचलित।
ii. **शुक्ल यजुर्वेद-** केवल मंत्र पद्य में है, उत्तर भारत में प्रचलित और यह प्रामाणिक शाखा मानी जाती है।

3. सामवेद-

- **रचना उद्देश्य-** ऋग्वेद के मंत्रों को गाने योग्य बनाने के लिए रचित।
- **संगीतात्मक-** इसे भारत की पहली संगीतात्मक पुस्तक माना जाता है।
- **मुख्य विषय-** सूर्य की स्तुति और मंत्रों का गायन।

4. अथर्ववेद-

- **रचनाकार-** अथर्वा ऋषि ने इसकी रचना की।
- **मुख्य विषय-** रोगों का उपचार, जादू-टोना, और अनार्य कृतियाँ।
- **संरचना-** इसमें 5849 मंत्र और 20 कांड हैं।

आरण्यक ग्रंथ-

- इनकी रचना जंगलों में ऋषियों द्वारा की गई थी।

क्र.	वेद	पुरोहित	कार्य
1.	ऋग्वेद	होता/होतृ	देवताओं का आह्वान
2.	यजुर्वेद	अध्वर्यु	याज्ञिक कर्मकांडों का अनुष्ठान
3.	सामवेद	उद्गाता	ऋचाओं का गायन करना
4.	अथर्ववेद	ब्रह्मा	यह तीनों अन्य पुरोहितों के यज्ञ संपादन का निरीक्षण भी करता था। यह सर्वोच्च पुरोहित था।

वेदों से संबंधित साहित्य

वेद	संबंधित ब्राह्मण ग्रन्थ	संबंधित उपनिषद्
ऋग्वेद	ऐतरेय (रचयिता- महिदास) कौषीतिकी (शांखायन)	ऐतरेय कौषीतिकी
शुक्ल यजुर्वेद	शतपथ	वृहदारण्यक व ईश
कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय	कठ मैत्रायणी तैत्तिरीय श्वेताश्वर
सामवेद	पंचविंश (ताण्ड्य) षड्विश (अद्भुत) जैमिनीय (तलवकार)	छान्दोग्य जैमिनीय केन
अथर्ववेद	गोपथ	मुण्डक माण्डुक्य प्रश्न

वेदों के चार उपवेद -

क्र.	वेद	उपवेद	रचियता
1.	ऋग्वेद	आयुर्वेद	धनवंतरी
2.	यजुर्वेद	धनुर्वेद	विश्वामित्र
3.	सामवेद	गन्धर्ववेद	भरतमुनी
4.	अथर्ववेद	शिल्पवेद	विश्वकर्मा

श्रुति –

- वेदों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में सुनकर (बोलकर) हस्तांतरित वेदों को श्रुति कहा जाता है।

स्मृतियाँ -

- वेदों को याद करके एक से दूसरों को सुनना स्मृतियों वेदों के अनुपूरक ग्रंथ है।
- इन्हें वैदिक साहित्य में शामिल नहीं किया गया है।
- सबसे प्राचीनतम स्मृति 'मनु स्मृति' है।

आरण्यक –

- वानप्रस्थ आश्रम के दौरान लिखे गए ग्रंथ आरण्यक ग्रंथ कहलाएँ।

ब्राह्मण ग्रंथ –

- वेदों की विशेष व्याख्या करने वाले ग्रंथ।

उपनिषद् -

- उपनिषद् प्राचीनतम दार्शनिक विचारों का संग्रह है।
- उपनिषद् तीन शब्दों 'उप +नि + सद्' से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ क्रमशः 'समीप, ध्यानपूर्वक, बैठना' होता है, अर्थात् गुरु के समीप ध्यानपूर्वक बैठना।
- उपनिषदों के साथ ही वेदों का अन्त हो गया, अत: इसे वेदान्त भी कहा जाता है।
  कुल उपनिषद् - 108
  प्रमुख उपनिषद् – 12
- 'सत्यमेव जयते' वाक्यांश मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है।
- इसे अक्सर लोक विश्वासों और व्यवहारों की अंतरंग जानकारी देने वाला ग्रंथ माना जाता है।

वेदांग और सूत्र साहित्य -

- वेदांगों की संख्या छह हैं-
  1. शिक्षा - वेदों की नासिका
  2. व्याकरण - वेदों के मुख
  3. कल्प - वेदों के हाथ
  4. निरुक्त - वेदों के श्रोत (कान)
  5. छन्द - वेदों के पैर
  6. ज्योतिष - वेदों के नेत्र
- सूत्र साहित्य वैदिक साहित्य का अंग न होने के बावजूद उसे समझने में सहायक है।
- तीसरी श्रेणी साहित्य की है, जिसे "वेदांग" अर्थात् वेदों का अंग कहा जाता है। इनमें उच्चारण, ध्वनि विज्ञान, व्याकरण, शब्द व्युत्पत्ति विज्ञान, ज्योतिष से संबंधित ग्रंथों के अतिरिक्त विशद "कल्पसूत्र" भी हैं जिसके चार उप-विभाजन हैं-

  i. श्रोत सूत्र - इनमें अश्वमेध और राजसूय जैसे यज्ञों का विवरण है।

  ii. गृह्य सूत्र - इनमें अंतिम संस्कार सहित घरेलू कर्मकांडों के नियम दिए गए हैं।

  iii. धर्म सूत्र - इनमें सामाजिक नियम दिए गए हैं।

  iv. सुल्व सूत्र - रेखागणित के सिद्धांत दिए गए हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन-सा वैदिक लेख पहली बार 'पुनर्जन्म के सिद्धांत' की प्रणालीगत व्याख्या देता है?
(a) छांदोग्य उपनिषद्
(b) मुंडकोपनिषद्
(c) शतपथ ब्राह्मण
(d) बृहदारण्यक उपनिषद्

2. प्राचीन भारतीय लेखों के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सी दो नदियों के बीच की भूमि 'ब्रह्मावर्त' कहलाती है?
(a) सरस्वती नदी और दृश्यवती नदी
(b) सरस्वती नदी और सरयू नदी
(c) सुतुद्री नदी और विपासा नदी
(d) गंगा नदी और यमुना नदी

3. 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' या 'हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो' यह निम्नलिखित में से किस उपनिषद् से आता है?
(a) छांदोग्य
(b) मांडूक्य
(c) मुंडक
(d) बृहदारण्यक

4. निम्नलिखित में से किस ग्रंथ में जलप्लावन की कथा का वर्णन है?
(a) कौषितकी की ब्राह्मण
(b) शतपथ ब्राह्मण
(c) गोपथ ब्राह्मण
(d) ऐतरेय ब्राह्मण

5. सूची-I की संहिताओं को सूची-II के ब्राह्मणों से सुमेलित कीजिए एवं नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

सूची-I	सूची-II
A. ऋग्वेद	1. तैत्तिरीय ब्राह्मण
B. यजुर्वेद	2. कौशीतकी ब्राह्मण
C. सामवेद	3. गोपथ ब्राह्मण
D. अथर्ववेद	4. पंचविंश ब्राह्मण

कूट-

	A	B	C	D
(a)	2	3	4	1
(b)	4	2	3	1
(c)	2	1	4	3
(d)	1	4	3	2

6. निम्नलिखित में से किस सम्मेलन को नरिस्ता कहा जाता था, जिसका अर्थ एक ऐसा संकल्प है जिसे तोड़ा नहीं जा सकता था?
(a) विधाता
(b) गण
(c) समिति
(d) सभा

7. निम्नलिखित में से कौन वेदांग का हिस्सा नहीं है?
(a) ज्योतिष
(b) कल्प
(c) निरुक्त
(d) आगम

8. ऋग्वैदिक काल में कोई नियमित भूमि कर नहीं था, क्योंकि-
(a) लोग एक स्थान पर स्थायी रूप से नहीं बसे थे।
(b) सरकार इस संबंध में अनभिज्ञ थी।
(c) राजा को भूमि का मालिक नहीं समझा जाता था।
(d) लोग भूमि कर देने के आदी नहीं थे।

9. ऋग्वेद में किस नदी को 'अम्बितमे, नदीतमे और देवितमे' कहा गया है?
(a) सिंधु
(b) वितस्ता
(c) परुष्णी
(d) सरस्वती

10. निम्नलिखित में से जिस वेद की रचना गद्य एवं पद्य दोनों में की गई है, उसका नाम है-
(a) ऋग्वेद
(b) सामवेद
(c) यजुर्वेद
(d) अथर्ववेद

11. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर चुनिए-

सूची-I	सूची-II
A. ऋग्वेद	1. होता
B. यजुर्वेद	2. अध्वर्य
C. सामवेद	3. उद्गाता
D. अथर्ववेद	4. ब्रह्मा

कूट-

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	1	3	4
(c)	3	2	1	4
(d)	1	3	2	4

12. 'युद्ध का प्रारंभ मनुष्यों के मस्तिष्क में होता है' किस ग्रंथ में उल्लिखित है?
(a) ऋग्वेद
(b) सामवेद
(c) अथर्ववेद
(d) मुण्डकोपनिषद्

13. निम्नलिखित में से कौन-से ग्रंथ वेदों या श्रुतियों के अंग नहीं थे?
(a) संहिता
(b) ब्राह्मण
(c) उपनिषद्
(d) पुराण

14. वैदिक काल में किस पशु को 'अघन्या' माना गया है?
(a) बैल
(b) भेड़
(c) गाय
(d) हाथी

15. निम्नलिखित में से इंद्र को ऋग्वेद में किस नाम से पुकारा गया है?
(a) वीरेंद्र
(b) पुरंदर
(c) पशुपति
(d) मारुत

ANSWER KEY				
1. [a]	2. [a]	3. [d]	4. [b]	5. [c]
6. [d]	7. [d]	8. [c]	9. [d]	10. [c]
11. [a]	12. [c]	13. [d]	14. [c]	15. [b]

♦ ♦ ♦ ♦

मुश्किल परीक्षाऐं भी आसान लगेगी
जब तैयारी होगी लक्ष्य के साथ

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

तृतीय श्रेणी (3rd Grade)

अध्यापक भर्ती परीक्षा

LEVEL-I and LEVEL-II

(हिन्दी, ENGLISH, संस्कृत, सामाजिक अध्ययन, SCIENCE-MATH)

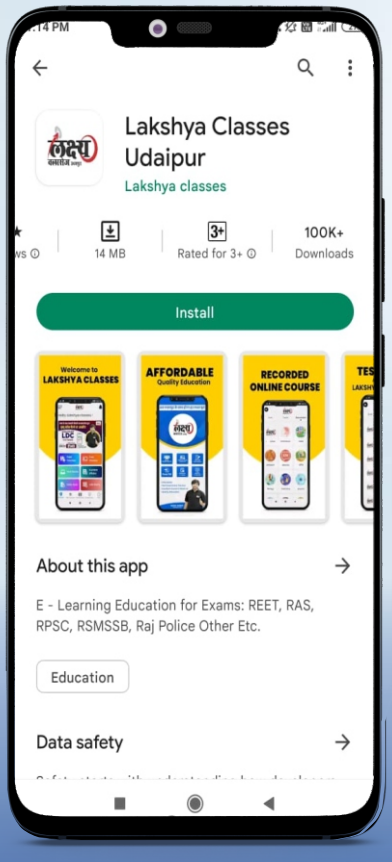

- COURSE OFFERED -

- NOTES WITH LIVE FROM CLASSROOM BATCH
- MCQ BASED BATCH
- TASK BASED TEST SERIES
- NOTES WITH RECORDED BATCH
- OFFLINE CLASSROOM BATCH

क्यों हैं लक्ष्य क्लासेज विशेष?

- व्यापक अध्ययन सामग्री
- MCQ की बुकलेट
- नियमित टेस्ट सीरीज
- पूर्णत: समर्पित यूट्यूब चैनल
- लाइब्रेरी सुविधा
- अनुभवी एवं योग्य फैकल्टी
- सुसज्जित स्मार्ट क्लासरूम
- ऑनलाइन एप्लीकेशन एक्सेस
- मासिक करंट अफेयर्स मैगज़ीन
- नियमित काउंसलिंग

Scan to Download
Lakshya App Now
Google play

INSTAGRAM FACEBOOK YOUTUBE TELEGRAM

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज™

M. 6376957258, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur